संस्थापित १८६७ ई०

आर्य मित्र

साप्ताहिक

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

एक प्रति ₹ २.००
वार्षिक शुल्क ₹ १००
(विदेश ५० डालर वार्षिक) आजीवन शुल्क ₹ १०००

● वर्ष : १२२ ● अंक : १५ ● ०६ मई २०१७ वैशाल शुक्ल पक्ष चतुदर्शी संवत् २०७४ ● दयानन्दाब्द १६३ वेद व मानव सृष्टि सम्वत् : १६६०८५३११८

आर्य समाज की शक्ति है युवा पीढ़ी

डा० धीरज सिंह

आर्य समाज की शक्ति है युवा पीढ़ी इसे आर्य समाज के कार्यक्रमों में प्रोत्साहित करना चाहिये। ये विचार २३ अप्रैल को आर्य समाज बहजोई जिला सम्भल के वार्षिक सम्मेलन एवं स्वागत समारोह में आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के यशस्वी प्रधान डा० धीरज सिंह जी ने व्यक्त किये। उन्होंने बताया कि जिन आर्य समाजों के साथ स्कूल, पाठशाला, कन्या–पाठशाला लगी हैं, और दुकान आदि से अच्छी आर्थिक आय है उसमें तो नए सदस्य का प्रवेश होना असम्भव जैसी बात है। नए सदस्य के आने पर उन समाजों के अधिकारियों को ऐसा लगता है जैसे उनके राज्य व जमींदारी पर आक्रमण हो रहा है। पूरी शक्ति लगाकर नवागंतुक को रोकने का प्रयास करते हैं। यदि कभी नए सदस्यों की भर्ती होती है तो उन्हीं अधिकारियों में से किसी के धन के बहाने उक्त समाज पर अधिकार जमाने के लिए ऐसे व्यक्तियों को लाया जाता है जिनकी आर्य समाज से दूर तक का भी सम्बन्ध नहीं होता है। वे अधिकारियों में से किसी की फैक्ट्री, दुकान आदि में कार्य करने वाले कर्मचारी मात्र होते हैं।

दूसरा कारण आर्य समाज में नए रक्त के न आने का कारण यह है कि उनकी रुचि के अनुसार समाज में कार्यक्रम नहीं होता है। अपनी रुचि के विरुद्ध कार्यक्रम में तीन घण्टे तक लगातार उनके लिए बैठना कठिन है। इसके अतिरिक्त वृद्धों के मध्य गम्भीर वातावरण में अधिक बैठना नवयुवकों के स्वभाव व प्रकृति के भी विरुद्ध है।

आर्य समाज के प्रति नवयुवक कैसे प्राप्त हो? इसका यही उत्तर कि मनोविज्ञान का यह साधारण सा नियम है कि जिस प्राणी को अपनी ओर आकर्षित करना है उसकी रुचि के अनुसार उसे सम्मुख कार्यक्रम रखा जाए।

नवयुवकों की रूचि खेल–कूद तथा संघर्ष करने में होती है। बस इन्हीं के आधार पर अपने कार्यक्रम की रचना कर समाज को नवयुवकों के सम्मुख उपस्थित होना चाहिए। आर्य जगत् की शिरोमणि आर्य प्रतिनिधि सभा ने इस तथ्य को सम्मुख रखकर सार्वदेशिक आर्यवीर दल की स्थापना की और सभी आर्य समाजों को अपने यहाँ इसकी शाखाओं की स्थापना करने का निर्देश दिया परन्तु अधिकांश आर्य समाजों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। जिन आर्य समाजों ने इसकी स्थापना की उनमें नवयुवक शक्ति विराजमान है और इसी कारण उनकी गतिविधियों में जीवन है।

आज आर्य वीर दल व आर्य कुमार सभा की स्थापना स्वतन्त्र रूप से हुई और उसमें भी छोटी आयु के कुमारों को आकर्षित करने के अनेक उपाय अपनाए गए, जिसके परिणामस्वरूप हजारों कुमार आर्य समाज की सम्पत्ति बन गए।

आज आर्य वीरदल व आर्य कुमार सभा आर्य समाजों तथा आर्य सभाओं की उपेक्षा के कारण अच्छी अवस्था में नहीं है, परन्तु फिर भी प्रतिवर्ष हजारों नवयुवक इनके द्वारा आर्य समाज में प्रविष्ट होते हैं। नवयुवक भी ऐसे आते हैं जिनके परिवारों को आर्य समाज से कोई सम्बन्ध नहीं है।

आर्य वीर दल की स्थापना के अतिरिक्त आर्य समाज के अधिकारियों का प्रयत्न करते रहना चाहिए और अपने साप्ताहिक सत्संगों को भी रूचिकर बनाना चाहिए। ताकि जनता आर्यसमाज की ओर अधिक से अधिक आकर्षित हो सके।

इस कार्यक्रम में जिला आर्य प्रतिनिधि सभा के जिला मंत्री दयाशंकर आर्य लक्ष्मीनाराण जी, विद्युत कुमार जी प्रधान, आर्य समाज बहजोई कोषाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार जी, नवनीत कुमार आर्य आदि आर्य महानुभाव कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

आर्य समाज बहजोई (सम्भल) में सभा प्रधान जी का स्वागत करते हुए पदाधिकारी गण

अनिवार्य सूचना

आर्य मित्र के पाठकों के संज्ञान हेतु निवेदन है कि पूर्व मुद्रक/प्रकाशक सियाराम वर्मा एवं पूर्व का० अधीक्षक सियाराम वर्मा ने प्रकाशन/प्रेस एवं अन्य स्थानों पर पूर्व प्रधान देवेन्द्र पाल वर्मा के इशारे पर बाधायें खड़ी की थी वे अब ठीक हो गई हैं। भविष्य में आपको आर्य मित्र नियमित प्राप्त होता रहेगा, न होने की स्थिति में सूचित अवश्य करायें।

डा० धीरज सिंह
का०वा० प्रधान – आर्य प्रतिनिधि सभा
उ०प्र०, लखनऊ

डी०ए०वी डिग्री कालेज – बुढ़ाना ११, १२ एवं १३ अप्रैल को ऋग्वेद पारायण यज्ञ करते हुए प्रदेश कोषाध्यक्ष श्री अरविन्द कुमार जी, सपत्नीक यजमान रूप में सुशोभित हैं।

डॉ. धीरज सिंह
कार्यवाहक प्रधान/संरक्षक

स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
मंत्री/प्रधान सम्पादक

हरीश कुमार शास्त्री
व्यवस्थापक

सम्पादकीय.....

ऐसी है हमारी देववाणी संस्कृत भाषा

आज के दौर में जहाँ लोगों ने अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों में आधुनिक तरीके से रहने, खाने, बोलने के प्रचलन में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग करते है और उसे अपनी शान समझते हैं। खास तौर से हमारे भारत के लोग जिनमें बहुत ही तेजी से अपने बच्चों को अंग्रेजी स्कूलों में दाखिल कराने की होड़ लगी हुई है।

यदि हम भारतवासी है तो हमें अपने देश की प्राचीन भाषा संस्कृत जिसे देवताओं की वाणी कहा जाता है, उसे जान लेना चाहिए संसार की जितनी भी भाषाऐं है उनकी जननी यह संस्कृत भाषा है, क्योंकि दुनिया में लगभग ६७ प्रतिशत के शब्द संस्कृत भाषा से लिए गये हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि कम्प्यूटर के द्वारा गणित को हल करने की विधि यानि 'यलवारितम संस्कृत भाषा में है न कि अंग्रेजी में, संस्कृत भाषा के शब्द कोष में १०२ अरब ७८ करोड़ ५० लाख शब्द है इतना बड़ा शब्द कोष अन्य किसी भाषा का नहीं है आपको जानकर और भी आश्चर्य होगा कि इतना बड़ा शब्दकोष होने के बाद भी बोलने के लिए सबसे कम शब्दों में वाक्य पूरा हो जाता है, सबसे कम शब्दों मे अपनी बात को कहने के लिए संस्कृत भाषा का जवाब नहीं। **FORBES** मैगजीन ने जुलाई १६८७ में संस्कृत भाषा के कम्प्यूटर साफ्टवेयर के लिए सबसे बेहतर भाषा माना था। आज अमेरिकी आंतरिक्ष वैज्ञानिक नासा के पास ताल पत्रों पर लिखित साठ हजार पाण्डुलिपियां है जिन पर नासा के वैज्ञानिक रिसर्च कर रहे है नासा के मुताबिक संस्कृत भाषा धरती पर बोली जाने वाली सबसे स्पष्ट भाषा है।

नासा के वैज्ञानिकों द्वारा बनाए जा रहे कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के लिए सुपर कम्प्यूटर संस्कृत भाषा में है जो २०३४ तक बनकर तैयार हो जायेंगे। आज दुनिया के वैज्ञानिक भी अपनी देववाणी संस्कृत भाषा को कम्प्यूटर के लिए सबसे अच्छा विकल्प मान रहे है।

लंदन और आयरलैंड के कई स्कूलों में संस्कृत भाषा को अनिवार्य विषय बना दिया है। दुनिया के १७ देशों में से कम से कम एक यूनिवर्सिटी में संस्कृत भाषा पढ़ाई जाती है।

आपको जानकर और भी आश्चर्य होगा कि संस्कृत भाषा के पढ़ने से दीमाग बहुत तेज होता है और संस्कृत भाषा एक अकेली ऐसी भाषा है जिसे बोलने में जीभ की सभी मांसपेशियों का स्तेमाल होता है, इसी कारण संस्कृत भाषा को पढ़ने वाले को किसी भी देश की भाषा को सही–सही उसी प्रकार बोलने में ज्यादा परेशानी नहीं होती।

ऐसी अनमोल उपहार के रूप में यह भाषा संस्कृत हमें मिली है हमारे देश भारत के गौरव को बढ़ा रही है लेकिन हम अपनी नयी पीढ़ी को दूसरों की नकल करने पर मजबूर कर रहे हैं अब वह दिन दूर नही है कि संस्कृत भाषा का ही बोल बाला हर तरफ होगा।

– हरीश कुमार शास्त्री

गतांक से आगे .....

सत्यार्थ प्रकाश

अथ तृतीय समुल्लासारम्भः

अथाऽध्ययनाऽध्यापनविधिं व्याख्यास्यामः

तदनन्तर धनुर्वेद अर्थात् राजसम्बन्धी काम करना है इसके दो भेद, एक निज राजपुरुष सम्बन्धी और दूसरा प्रजासम्बन्धी होता है। राजकार्य में सब सेना के अध्यक्ष शस्त्रास्त्रविद्या नाना प्रकार के व्यूहों का अभ्यास अर्थात् जिसको आजकल 'कवायद' कहते हैं जो कि शत्रुओं से लड़ाई के समय में क्रिया करनी होती है उन को यथावत् सीखें और जो जो प्रजा के पालने और वृद्धि करने का प्रकार है उन को सीख के न्यायपूर्वक सब प्रजा को प्रसन्न रक्खें दुष्टों को यथायोग्य दण्ड, श्रेष्ठों के पालन का प्रकार सब प्रकार सीख लें।

इस राजविद्या को दो–दो वर्ष में सीख कर **गान्धर्ववेद** कि जिस को गानविद्या कहते हैं। उस में स्वर, राग, रागिनी, समय, ताल, ग्राम, तान, वादित्र, नृत्य, गीत आदि को यथावत् सीखें परन्तु मुख्य करके **सामवेद का गान वादित्रवादनपूर्वक सीखें** और **नारदसंहिता** आदि जो–जो आर्ष ग्रन्थ हैं उन को पढ़ें परन्तु भड़वे वेश्या और विषयासक्तिकारक वैरागियों के गर्दभशब्दवत् व्यर्थ आलाप कभी न करें।

अर्थवेद कि जिस को शिल्पविद्या कहते हैं उस को पदार्थ गुण विज्ञान क्रियाकौशल, नानाविध पदार्थों का निर्माण, पृथिवी से लेके आकाश पर्यन्त की विद्या को यथावत् सीख के अर्थ अर्थात् जो ऐश्वर्य को बढ़ाने वाला है उस विद्या ो सीख े दो वर्ष में ज्योतिषशास्त्र सूर्यसिद्धान्तादि जिस में **बीजगणित, अंक, भूगोल, खगोल और भूगर्भविद्या** है इस को यथावत् सीखें।

तत्पश्चात् सब प्रकार की हस्तक्रिया, यन्त्रकला आदि को सीखें, परन्तु जितने ग्रह, नक्षत्र जन्मपत्र, राशि, मुहूर्त आदि के फल के विधायक ग्रन्थ हैं उन को झूठ समझ के कभी न पढ़े और पढ़ावें।

ऐसा प्रयत्न पढ़ने और पढ़ाने वाले करें कि जिस से **तीस** व **चौंतीस वर्ष** के भीतर समग्र विद्या उत्तम शिक्षा प्राप्त होके मनुष्य लोग कृतकृत्य होकर सदा आनन्द में रहैं। जितनी विद्या इस रीति से **तीस** वा **चौंतीस** वर्षों में हो सकती है उतनी अन्य प्रकार से शत–वर्ष में भी नहीं हो सकती।

ऋषिप्रणीत ग्रन्थों को इसलिये पढ़ना चाहिये कि वे बड़े विद्वान् सब शास्त्रवित् और धर्मात्मा थे। और अनृषि अर्थात् जो अल्पशास्त्र पढ़े हैं और जिन का आत्मा पक्षपातसहित है, उकने बनाए हुए गन्थ भी वैसे ही हैं।

पूर्वमीमांसा पर व्यासमुनिकृत व्याख्या, वैशेषिक पर गोतममुनिकृत न्यायसूत्र पर वात्स्यायनमुनिकृत भाष्य, पतञ्जलिमुनिकृतसूत्र पर व्यांसमुनिकृत भाष्य, कपिलामुनिकृत सांख्यसूत्र पर भागुरिमुनिकृत भाष्य वृत्ति सहित पढ़ें पढ़ावें। इत्यादि सूत्रों को कल्प अंग में भी गिनना चाहिए।

जैसे ऋग्यजुः साम और अथर्व चारों वेद ईश्वरकृत हैं वैसे **ऐतरेय, शतपथ, साम** और **गोपथ चारों ब्राह्मण, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निघण्टु, निरुक्त, छन्द** और **ज्योतिष छः वेदों के अंग, मीमांसादि छः शास्त्र वेदों के उपागं, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद** और **अर्थवेद** ये चार वेदों के उपवेद इतयादि सब ऋषि मुनि के किये ग्रन्थ हैं। इनमें भी जो जो वेदविरुद्ध प्रतीत हो उस–उस को छोड़ देना क्योंकि वेद ईश्वरकृत होने से निर्भ्रान्त स्वतःप्रमाण अर्थात् वेद का प्रमाण वेद ही से होता है। ब्राह्मणादि सब ग्रन्थ परतः प्रमाण अर्थात् इनका प्रमाण वेदाधीन है। वेद की विशेष व्याख्या 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' में देख लीजिये और इस ग्रन्थ में भी आगे लिखेंगे।

अब जो परित्याग के योग्य ग्रन्थ हैं उनका परिगणन संक्षेप से किया जाता है अर्थात् जो–जो नीचे ग्रन्थ लिखेंगे वह–वह जाल ग्रन्थ समझना चाहियें। व्याकरण में कातन्त्र, सारस्वत, चन्द्रिका, मुग्धबोध, कौमुदी, शेखर, मनोरमा आदि। कोश में अमराकोशादि। **छन्दोग्रन्थ** में वृत्तरत्नाकरादि। शिक्षा में 'अथ शिक्षां प्रवक्ष्यामि पाणिनीयं मतं यथा 'इत्यादि। **ज्यौतिष** में शीघ्रबोध, मुहूर्त्तचिन्तामणि आदि। **काव्य** में नायिकाभेद, कुवलयानन्द, रघुवंश माघ, किरातार्जुनीयादि। **मीमांसा में धर्मसिन्धु,** व्रताकादि। **वैशेषिक** में तर्कसंग्रहादि। न्याय में जागदीशी आदि। **योग** में हठप्रदीपिकादि **सांख्य** में सांख्यतत्त्वकौमुद्यादि। **वेदान्त** में योगवासिष्ठ पञ्चदश्यादि। **वैद्यक** में शाङ्गधरादि। **स्मृतियों** में मनुस्मृति के प्रक्षिप्त श्लोक और अन्य सब स्मृति, सब तन्त्र ग्रन्थ, सब पुराण, सब उपपुराण, तुलसीदासकृत भाषारामायण, रुक्मिणीमङ्गलादि और सर्वभाषाग्रन्थ ये सब कपोलकल्पित मिथ्या ग्रन्थ हैं।

प्रश्न – क्या इन ग्रन्थों में कुछ भी सत्य नहीं?

उत्तर – थोड़ा सत्य तो है परन्तु इसके साथ बहुत सा असत्य भी है। इस से **'विषसम्पृक्तन्नवत् त्याज्याः'** जैसे अत्युत्तम अन्न विष से युक्त होने से छोड़ने योग्य होता है वैसे ये ग्रन्थ हैं।

प्रश्न– क्या आप पुराण इतिहास को नहीं मानते?

उत्तर– हां मानते हैं परन्तु सत्य को मानते हैं मिथ्या को नहीं।

क्रमशः अगले अंक में .....

धरोहर....

अमर बलिदानी : सुखदेव

–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मन्त्री

१८५७ के स्वतंत्रता संग्राम में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा देने वाली झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को अपना आराध्य मानने वाले अमर बलिदानी सुखदेव का जन्म ग्राम नौघरा जिला लुधियाना पंजाब में १५ मई, १९०७ को हुआ था। उनकी शिक्षा लायलपुर और फिर लाहौर में हुई। लाहौर में उकना सम्पर्क भगत सिंह, राजगुरू, भगवतीचरण बोहरा आदि क्रांतिकारियों से हुआ। इस सम्पर्क ने उनके मन में क्रांति की वह ज्योति जलायी, जिसमसे वे बलिदानी चोला पहनकर फांसी के तख्ते तक जा पहुंचे।

सितम्बर १९२६ को दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में एक गुप्त बैठक हुई। इसमें पूरे देश में क्रांतिकारी गतिविधियों के विस्तार के लिए एक समिति का गठन किया गया। इस समिति की योजनानुसार सुखदेव को पंजाब में क्रांतिकारी कार्यों का नेतृत्व करने को कहा गया। सुखदेव ने इसके बाद पंजाब के दूरदराज के क्षेत्रों में सम्पर्क करना प्रारम्भ कर दिया।

१९२८ में साइमन कमीशन भारत आया। भारत के सभी क्षेत्रों में उसका व्यापक विरोध हुआ। ३० अक्टूबर १९२८ को लाहौर में उसके आगमन पर एक विशाल विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया गया, जिसका नेतृत्व पंजाब केसरी लाला लाजपत राय ने किया। प्रदर्शन में उमड़े विशाल जनसमूह से पुलिस कप्तान स्कॉट बौखला गया। उसने प्रदर्शनकारियों पर घोड़े चढ़ा दिये और स्वयं लाठी लेकर बयोवृद्ध लाला जी पर टूट पड़ा।

इससे लाला लाजपत राय को गम्भीर चोटें आयी। कुछ समय बाद उनका देहान्त हो गया। उनकी चिता की भस्म माथे पर लगाकर क्रांतिकारियों ने शपथ ली कि इसका बदला लिया जायेगा। १७ सितम्बर १९२८ को स्कॉट के धोखे में साण्डर्स को पुलिस कार्यालय के बाहर गोली मार दी गयी। इसमें चन्द्रशेखर आजाद, भगत सिंह, और राजगुरू के साथ सुखदेव भी शामिल थे।

सारे लाहौर नगर में शोर मच गया, पर कोई क्रांतिकारी हाथ नहीं आया। सब एक–एक कर लाहौर से बाहर निकल गये। आगे चलकर और भी कई गतिविधियों में सुखदेव ने भाग लिया, पर कुछ समय बाद वे पकड़े गये। तब तक दिल्ली के संसद भवन में बम फेंककर भगत सिंह व बटुकेश्वर दत्त ने स्वयं को गिरफ्तार करा दिया था। धीरे–धीरे साण्डर्स हत्याकाण्ड से जुड़े प्रायः सभी क्रांतिकारी पकड़ लिये गये। ७ अक्टूबर १९३० को भगत सिंह, सुखदेव, और राजगुरू को फांसी की सजा घोषित की गयी। इनके अन्य साथियों शिव वर्मा, डॉ० गया प्रसाद, जयदेव कपूर, किशोरी लाल तथा तीन अन्य को आजीवन करावास की सजा हुई।

जेल में क्रांतिकारियों पर अमानवीय अत्याचार किया जाता था। मारपीट और खाने में मिट्टी मिला देना तो सामान्य बात थी। इसके विरूद्ध सुखदेव ने लम्बा अनशन किया। इन तीनों को २४ मार्च १९३१ की प्रायः फांसी देने का निर्णय हुआ था, परन्तु तीनों की सजा का समाचार आते ही पूरे देश भर में आक्रोश फैल गया। पूरे देश में विरोध होने लगे। विरोध प्रदर्शन को देख कर प्रशासन अनहोनी की आशंका से घबरा उठा और उसने षड़यंत्रपूर्वक २३ मार्च १९३१ की शाम पौने सात बजे लाहौर के केन्द्रीय कारागार में गुपचुप तरीके से तीनों को फांसी दे दी। इतना ही नहीं, उनकी लाशों को भी घर वालों को न सौंपकर रावी नदी के तट पर मिट्टी का तेल डालकर जला दिया। पर इन तीन क्रांतिकारी के बलिदान से भारत के जनमानस में जो चेतना जगी, उसने अंग्रेजी शासन की नींव हिला दी।

संचालक– गुरूकुल पूठ (हापुड़)

गाय का दूध अमृत है

–स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मन्त्री

भारत में अर्थतन्त्र का आधार गऊ है। खेतों की उपज का वह भाग जो मानव नहीं खाता, भूसा आदि खाकर गाय हमें सुपाच्य दूध देती हैं। जन्म देने वाली माँ तो बच्चे को साल–दो साल दूध पिलाती है परन्तु गाय तो हमारा सम्पूर्ण जीवन लालन–पालन करती है, इसीलिए तो वह गऊमाता कहलाती है। गाय चौरासी लाख योनियों में अकेला ऐसा प्राणी है जिसका गोबर (मल) न केवल खाद्य पदार्थ है वरन् पूजास्थल को भी जिसके लेपन द्वारा शुद्ध किया जाता है। गाय ही अकेला ऐसा प्राणी है जिसका मूत्र गंगाजल की तरह पवित्र है जिसमें कभी कीड़े नहीं पड़ते। गाय का घी ऐसा हवि है जिसके यज्ञ में देने से सर्वाधिक लाभ होता है, वातावरण शुद्ध रहता है। एक तोला गाय का घी यज्ञ अथवा दीपक में जलाने से एक टन ऑक्सीजन, जो हमारी बीमारी दूर करने की क्षमता है।

गाय के गोबर–गोमूत्र से हमें कृषि के लिए आवश्यक खाद प्राप्त होती है। ऐसी खाद जिसे देने के पश्चात् कीटनाशक (पेस्टीसाईड) डालने की आवश्यकता नहीं होती है। गाय के गोबर की खाद से उत्पादित खाद्य सामग्री रोगरहित, पौष्टिक व सुस्वादु होती है। आज जो दाल, सब्जी आदि में स्वाद नहीं रहा वह इसलिए कि वह रासायनिक कीटनाशक से पैदा की जा रही है। रासायनिक खाद व पेस्टीसाईड से आज भूमिगत जल भी जहरीला हो गया है व जमीनें बंजर होती जा रही हैं।

गाय अगर बंजर जमीन पर रहती है तो उसके गोबर–गोमूत्र से वह बंजर जमीन भी उपाजाऊ हो जाती है। ऐसी परम उपयोगी पूजनीय गाय को आज प्रतिदिन लाखों की संख्या में काटा जा रहा है। वह दिन दूर नहीं जब एक दिन देश की गोवंश पूरी तरह समाप्त हो जायेगा। आइये हम सब मिलकर संकल्प लें कि देश की अस्मिता व विकास की प्रतीक गाय को कटने नहीं देंगे। यह तभी संभव होगा कि जब गाय की देश में कद्र हो अर्थात् हम गाय पालें अथवा गोग्रास निकालें, गाय का दूध पियें व हवन, दीपक आदि में गोघृत का प्रयोग करें। यही गाय की पूजा है।

क्या आप जानते है कि भैंस के दूध के नाम पर जो दूध प्रयोग कर रहे हैं वह क्या है? हो सकता है कि वह पेंट, यूरिया आदि से बनाया हुआ सिंथेटिक दूध हो, हो सकता है कि उसमें जोहड़ का पानी मिलाया गया हो। इससे बचने के लिए हम शुद्ध बढ़िया दूध के लिए एक घंटा सुबह एक घंटा शाम हाजिरी लगाकर ५० रू० प्रति लीटर महंगा व एक लीटर में ८५० से ६०० ग्राम जो दूध ला रहे हैं वह १५ फीसदी ऑक्सीजन इंजेक्शन लगा दूध है जो कि जहर है। आज जो कैंसर, गर्भपात, बांझपन, हृदयरोग, डायबिटीज, अस्थमा, टी०बी० आदि रोगों का फैलाव हो रहा है वह ऑक्सीटोसिन लगे दूध के कारण है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार आज माता के स्तनों में विष की मात्रा अहानिकर स्तर से २१ गुना अधिक हो गयी है जरा सोचें कि माता के द्वारा भी नवजात शिशुओं में विष पहुंच रहा है।

भैंस के दूध में लॉग चेन फैट (कोलेस्ट्राल) है जो रक्त धमनियों में जम जाती है। हाट अटैक का यही कारण है। इसके विपरीत गाय के दूध में स्वर्ण तुल्य कैरोटीन पदार्थ होता है जो आंखों की ज्योति बढ़ाता है और हृदय को पुष्ट करता है। महाभारत में यक्ष का प्रश्न " अमृत क्या है?" के प्रत्युत्तर में युधिष्ठिर कहते हैं कि "गाय का दूध अमृत है।"

आपने देखा ही होगा, भैंस के बच्चे को खींचकर ले जाना पड़ता है जबकि गाय का बछड़ा किसी पिता का उछलता–कूदता जाता है। भैंस का बच्चा दूध पीने के लिए छोड़ने पर अपनी माँ को पहचान नहीं पाता जबकि गाय का हजार गऊओं में से भी अपनी माता को ढूँढ लेता है। अब यह आप तय कर लें कि आप अपने बच्चे को भैंस के बच्चे की तरह सुस्त, ठस बुद्धि बनाना चाहते हैं अथवा गाय के बछड़े की तरह चपल व बुद्धिमान बनाना चाहते हैं।

गाय का दूध बुद्धिवर्द्धक होता है जबकि भैंस का दूध मोटापा बढ़ाने वाला होता है। गाय के दूध में ३.५ से ४ प्रतिशत चिकनाई होती जबकि भैंस के दूध में ५.५ से ६ प्रतिशत तक चिकनाई होती है इसीलिये हम अधिक चिकनाई के लालच में गाय के स्थान पर भैंस का दूध प्रयोग करते हैं। परनतु विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के अनुसार मानव शरीर के लिए ३.५ से ४ प्रतिशत चिकनाई पर्याप्त है, इससे अधिक चिकनाई मानव शरीर के लिए हानिकारक है। अतः भैंस का दूध लाभप्रद के स्थान पर हानिकर है।

अतः हम चाहते है कि हमारे बच्चे बड़े होकर महान बनें तो उन्हें बुद्धिवर्द्धक गाय का दूध ही पीने को दें। याद रखें कि गाय का दूध पीने से न केवल हम निरोगी बुद्धिमान बनेंगे, गाय की भी कद्र होगी, गाय की कद्र होने से ही गाय के प्राण बचेंगे और देश का विकास होगा।

दूध के नाम पर न पियें, स्वयं गाय का दूध पियें, औरों को भी गाय के दूध के लिए प्रेरित करें। यज्ञ–हवन, पूजा के दीपक में गाय का घी ही प्रयोग करें। खेती में रासायनिक खाद–कीटनाशक के स्थान पर गोबर की खाद व गोमूत्र से बना कीटनाशक ही प्रयोग करें।

निरोग रहने के लिए गोमूत्र से बनी औषधियों का सेवन करें।

संचालक– गुरूकुल पूठ (हापुड़)

महर्षि दयानन्द जी द्वारा प्रश्नोत्तर

– सूर्य देव चौधरी

पौराणिक पण्डितों ने स्वामीजी के पास पच्चीस प्रश्न भेजे। उनका उत्तर महाराज ने आर्य पुरूषों को लिखा दिया। वे प्रश्नोत्तर थे–

प्रश्न – 1 वेदादि शास्त्रों में संन्यासियों के धर्म ये बताए हैं– ज्ञान पूर्वक, वेदानुकूल, शास्त्रोक्त रीति से पक्षपात, शोक, वैर, हट और दुराग्रह का त्यागना। स्वार्थ साधन, निन्दा–स्तुति और मानापमान आदि दोषों को छोड़ना। संन्यासियों का धर्म है कि सत्यासत्य की आप परीक्षा करें। सर्वत्र विचरते हुए लोगों से असत्य छुडावें और सत्य ग्रहण करायें। जिससे उनकी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति हो और वे साधनों सहित विद्या लाभ कर अपने पुरुषार्थ से व्यावहारिक और पारमार्थिक सुखों को उपलब्ध करें। लोगों से दुराचार हटाना सन्यासियों का धर्म है।

प्रश्न–2 यदि आपके मत में क्षमा नहीं मानी जाती तो मनुस्मृति के प्रायश्चितों का क्या फल है? ईश्वर की दयालुता का क्या प्रयोजन है? यदि मनुष्य स्वतन्त्रता से आगन्तुक पापों से बचा रहे तो ईश्वर की क्षमाशीलता किस काम आयेगी?

उत्तर – हमारा मत वेदोक्त है, कोई कपोल कल्पित नहीं है वेदों में कहीं भी किये पापों की क्षमा नहीं लिखी! पापों की क्षमा मानना युक्ति संगत भी नहीं है। उन मनुष्यों पर शोक होता है जिन्हें प्रश्न करने तो नहीं आते परन्तु वे पाँचों में सबार बनाने की चेष्टा करते हैं।

क्षमा और प्रायश्चित्त का कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। प्रायश्चित कोई सुख भोग लेता है ऐसे ही प्रायश्चित में पाप–फल भोगा जाता है। अनेक नास्तिक जन ईश्वर का खण्डन करते हैं। दुःखों में और दुर्भिक्षादि में मनुष्य परमात्मा को गलियाँ तक देने लग जाते हैं। वह सब सहन कर लेता है और अपनी कृपा का परित्याग नहीं करता। यही उसकी क्षमा और दया है। न्यायकारी, यदि किये कर्मों को क्षमा कर दे तो वह अन्यायकारी हो जाता है। परमेश्वरी अपने स्वाभाविक गुण के विरुद्ध कभी कुछ नहीं करता। जैसे न्यायाधीश पापियों का विद्या और शिक्षा द्वारा पाप से पृथक् कर प्रतिष्ठा और दण्ड से शुद्ध और सुखी कर देता है, ऐसे ही ईश्वर का न्याय समझना चाहिए।

प्रश्न–3 यदि आपके मत में तत्वों के परमाणु नित्य है और कारण का गुण कार्य में रहता है तो यह बताइए कि सूक्षम परमाणुओं से स्थूल सृष्टि कैसे हो गई?

उत्तर– जो परम सूक्षम है उसी को परमाणु और अव्याकृत आदि नाम से पुकारा जाता है। ऐसे परमाणु अनादि और सत्य हैं। कारण के जो गुण समवायसम्बन्ध से हैं वे कारण में नित्य हैं और कार्यावस्था में भी नित्य बने रहते हैं। परमाणुओं में संयोग और विभाग का गुण भी नित्य है। इसलिए इनके मिलने और बिछड़ने से इनके स्वरूप में अनित्यता नहीं आती। परमाणुओं में गुरुत्व और लघुत्व दोनों का सामर्थ्य भी नित्य है। गुण गुणी का समवाय सम्बन्ध है।

प्रश्न– 4 मनुष्य और ईश्वर का परस्पर क्या सम्बन्ध है? ज्ञान से मनुष्य क्या ईश्वर बन सकता है? जीवात्मा और परमात्मा में क्या सम्बन्ध है। क्या वे दोनों नित्य हैं? यदि दोनों चेतन हैं तो जीव ईश्वराधीन है कि नहीं? अधीन है तो क्यों?

उत्तर– मनुष्य और ईश्वर का राजा–प्रजा, स्वामी–सेवक आदि का सम्बन्ध है। अल्पज्ञ होने से जीव ईश्वर नहीं हो सकता। जीव और ईश्वर में व्याप्य व्यापक आदि सम्बन्ध हैं। जीवात्मा सदा ईश्वराधीन रहता है, परन्तु कर्म करने में वह स्वतन्त्र है और फल भोगने में ही पराधीन हैं। ईश्वर का परमात्मा के अधीन होना आवाश्यक है।

प्रश्न–5 क्या आप संसार की रचना और प्रलय मानते हैं? प्रथम सृष्टि में एक मनुष्य उत्पन्न हुआ था अथवा अनेक? आदि में जब उनके कर्म समान थे तो परमेश्वर ने कुछ एक मनुष्यों ही को वेद ज्ञान क्यों दिया ऐसा करने से उसमें पक्षपात का दोष आ जाता है?

उत्तर– सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय हम मानते हैं। ईश्वर के गुण, कर्म और स्वभाव अनादि हैं। इसलिए सृष्टि भी प्रवाह से अनादि है। यदि ऐसा न माना जाए तो रचना से पूर्व ईश्वर को निकम्मा मानना होगा। परमेश्वर की तरह प्रकृति और जीव भी अनादि हैं। जैसे इस कल्प की सृष्टि की आदि में अनेक स्त्री–पुरूष उत्पन्न हुए, वैसे ही पूर्व कल्पों में होते रहे और आगामी कल्पों में होते रहेंगे। जीवों के कर्म भी अनादि हैं। जिन चार आत्माओं में परमात्मा ने वेद का प्रकाश दिया उनके सदृश्य अथवा उनसे अधिक किसी के भी पुण्य नहीं थे। इसलिए परमात्मा में पक्षपात का दोष नहीं आता।

प्रश्न –6 आपके मतानुसार कर्म–फल यथाकर्म न्यूनाधिक होता है तो मनुष्य स्वतन्त्र कैसे हुआ? परमेश्वर का जैसा ज्ञान है जीव वैसा ही कर्म करेगा इसलिए स्वतन्त्र न रहा।

उत्तर– कर्म फल न्यूनाधिक कभी नहीं होते। जिसने जैसा और जितना कर्म किया हो उसे वैसा और उतना ही फल न दिया जाये तो अन्याय हो जाता है। हे आर्य जनों! ईश्वर में भूत–भविष्यत् काल का सम्बन्ध नहीं है। ईश्वर का ज्ञान सदा एक रस है। जैसे ईश्वर अपने ज्ञान में स्वतन्त्र है, वैसे ही जीव कर्मों के करने में स्वतन्त्र है, परन्तु फल भोगने में परतन्त्र है।

प्रश्न – 7 मोक्ष क्या पदार्थ है?

उत्तर – सब अशुभ कर्मों से रहित होकर केवल शुभ ही कर्म करना जीवन भक्ति है, और दुःख मात्र से छूटकर आनन्दपूर्वक परमेश्वर में रहन मुक्ति है।

प्रश्न– 8 धन बढ़ाना, कला–कौशल द्वारा लोगों को सुखी करना और रोगग्रस्त पापी मनुष्य की औषधादि देना धर्म है अथव अधर्म?

उत्तर– न्याय से धन बढ़ाने, कला–कौशल निकालने और औषध आदि बनाने में धर्म हैं यदि कोई मनुष्य ऊपर कहे कर्म अन्याय से करे तो अधर्म है। पापी मनुष्य को रोग से छुड़ाकर धर्म–कार्यों में लगाना धर्म है।

प्रश्न– 9 मांस खाने में पाप है अथवा नहीं? यदि पाप है तो वेद और आप्त ग्रन्थों में, यज्ञ में हिंसा का विधान है और भक्षणार्थ मारना क्यों लिखा है?

उत्तर– मांस खाने में पाप है। वेदों तथा आप्त ग्रन्थों में यज्ञादि में हिंसा करना कहीं भी नहीं लिखा। गोमेध आदि शब्दों के अर्थ बामियों ने बिगाड़े हैं। इनका वास्तविक अर्थ हिंसा–परक नहीं है। जैसे डाकू आदि दुष्ट जनों को राजा लोग मारते हैं ऐसे ही हानिकारक पशुओं को मारना भी लिखा है, परन्तु खाने का लेख नहीं है। आजकल तो बामियों ने मिथ्या श्लोक बनाकर गौ–मांस तक खाना भी बताया है! जैसे मनुस्मृति में इन धूर्तों का मिलाया हुआ लेख है कि गो–मांस का पिण्ड देना चाहिए। क्या कोई पुरूष ऐसे भ्रष्ट वचन मान सकता है।

प्रश्न 10– जीव का क्या लक्षण है?

उत्तर – जीव के लक्षण न्याय–शास्त्र में इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख–दुःख और ज्ञान लिखे हैं।

प्रश्न 11– सूक्ष्म यन्त्रों से ज्ञान होता है कि जल में अनन्त जीव हैं। इस अवस्था में क्या जल–पान करना चाहिए?

उत्तर– जब पात्र और पात्रस्थल जल अन्य वाले हैं तो उनमें अनन्त जीव नहीं समा सकते। जल को आँख से देखकर और वस्त्र से छान कर पीना चाहिए।

प्रश्न – 12 पुरूष के लिये बहुत स्त्रियों से विवाह करने का कहाँ निषेध है? यदि है तो धर्म–शास्त्र में यह क्यों आता है कि यदि एक पुरूष के अनेक स्त्रियाँ हों और उनमें से एक पुत्रवती हो जाये तो सब पुत्रवालियाँ समझी जायें?

उत्तर– वेद में बहु विवाह का निषेध हैं। संसार में सभी मनुष्य अच्छे नहीं हो सकते। इसलिये यदि कोई अधर्मी पुरूष अनेक स्त्रियों से विवाह कर ले तो उसकी स्त्रियों में परस्पर विरोध अवश्य होगा। यदि एक के पुत्र हो तो दूसरी उसे विष आदि से मार न दें, इसलिये धर्म–शास्त्र में लिखा है कि उसे अपना पुत्र ही समझें।

प्रश्न– 13 ज्योतिष–शास्त्र के फलित–भाग को क्या आप मानते हैं? क्या भृगु–संहिता आप्त ग्रन्थ है?

उत्तर – हम ज्योतिष के फलित–भाग को नहीं मानते, किन्तु गणित भाग को ही मानते हैं। ज्योतिष के जितने सिद्धान्त ग्रन्थ हैं उनमें फलित का लेश भी नहीं है। भृगु–संहिता में गणित है इसलिये उसे हम मानते हैं। ज्योतिष शास्त्र के सिद्धान्त ग्रन्थों में भूत–भविष्यत् काल का ज्ञान नहीं लिखा है और न ही उनमें मनुष्य के सुख–दुःख के ज्ञान का लेख है।

प्रश्न– 14 ज्योतिष–सिद्धान्त में किस ग्रन्थ को सिद्धान्त–ग्रन्थ स्वीकार करते हैं?

उत्तर– जितने भी वेदानुकूल ग्रन्थ हैं उन सबको हम आप्त ग्रन्थ मानते हैं।

प्रश्न– 15 क्या आप पृथ्वी पर सुख–दुःख, विद्या धर्म और मनुष्य संख्या की न्यूनता और अधिकता मानते हैं? यदि मानते हैं तो क्या पहले इनकी वृद्धि थी? अब है? अथवा आगे होगी?

उत्तर – हम पृथ्वी पर सुखादि की वृद्धि सापेक्ष होने से अनित्य मानते हैं और मध्यम अवस्था में बराबर स्वीकार करते हैं।

प्रश्न–16 धर्म का क्या लक्षण है? ईश्वरकृत सनातन है अथवा मनुष्यकृत?

उत्तर– धर्म का का लक्षण पक्षपात रहित न्याय है और सत्य का ग्रहण तथा असत्य की परित्याग है। वह वेद प्रतिपादित और ईश्वरकृत सनातन है।

प्रश्न – 17 यदि कोई ईसाई, मुसलमान आपके मत में दृढ़ विश्वासी हो जाये तो क्या आपके अनुयायी उसे अपने में मिला लेगें और उसका बनाया भोजन खा लेंगे?

उत्तर – वेद ही हमारा मत है। बड़े शोक और अन्धेर की बात है कि आप लोगों ने केवल खान–पान, शौच, स्नान, वेशभूषा और उठने बैठने आदि को ही धर्म मान रखा है। ये तो अपने अपने देशों की रीतियां हैं।

प्रश्न– 18 क्या आपके मत में ज्ञान के बिना भी मुक्ति हो जाती है?

उत्तर– परमेश्वर सम्बन्धी ज्ञान के बिना किसी की मुक्ति नहीं होती। जो धर्म पर आरूढ़ होगा उसे ज्ञान भी अवश्य होगा।

प्रश्न – 19 श्राद्ध करना क्या शास्त्रानुसार है? शास्त्रानुकूल नहीं तो पितृ–कर्म का क्या अर्थ है? क्या मनुस्मृति आदि ग्रन्थों में इसका विधान मिलता है?

उत्तर– जीवित पितरों को श्रद्धा से, सेवा से, पुरूषार्थ से और पदार्थों से तृप्त करना श्राद्ध है। ऐसे ही श्राद्ध का विधान वेद में मिलता है। मनु–स्मृति में भी जो लेख वेदानुकूल हैं वही मानने योग्य हैं।

प्रश्न – 20 कोई मनुष्य यह समझकर आत्मघात कर ले कि मैं पापों से नहीं बच सकता तो क्या ऐसा करने में कोई पाप होता है?

उत्तर– आत्मघात करने में पाप ही होता हैं! पापाचरण के फल भोगे बिना कोई मनुष्य पापों से नहीं बच सकता।

प्रश्न– 21 जीवात्मा असंख्य हैं अथवा संख्या सहित? क्या कर्मवश मनुष्य पशु और वृक्षादि को योनियों में जा सकता है।

उत्तर– ईश्वर के ज्ञान में जीवों की संख्या है, परन्तु अल्पज्ञान में वे असंख्य हैं। पाप–कर्मों की अधिकता से जीव, पशुओं और वनस्पतियों की योनियों में जाता है।

प्रश्न– 22 क्या विवाह करना उचित है? सन्तानप्राप्ति से किसको पाप लगता है?

उत्तर– जो जन पूर्ण विद्वान और जितेन्द्रिय होकर सबका उपकार करना चाहें उन्हें तो विवाह करना उचित नहीं है। जो मनुष्य ऐसा नहीं कर सकते उन्हें विवाह करना चाहिए, वेदानुसार विवाह करके ऋतुगामी रहते जो सन्तान प्राप्त हो उसमें कोई दोष नहीं है। व्यभिचार अन्याय है। इसलिए उससे उत्पन्न हुई सन्तान दोषयुक्त है।

प्रश्न– 23 क्या अपने सगोत्र में विवाह सम्बन्ध करना दूषित है। यदि है तो क्यों? क्या सृष्टि की आदि में ऐसा हुआ था?

उत्तर– सगोत्र में विवाह करने से शरीर और आत्मा की यथावत् उन्नति नहीं होती और बल तथा प्रेम भी टीक–टीक नहीं बढ़ता। इन दोषों के कारण भिन्न गोत्र में विवाह करना उचित है सृष्टि की आदि में तो गोत्र ही नहीं थे। इसलिए उस समय का प्रश्न करना व्यर्थ प्रयास है।

प्रश्न – 24 धर्माधर्म मनुष्य के अन्तरंग भावों से सम्बन्ध रखता है अथवा बाहर के परिणामें से? यदि कोई मनुष्य किसी डूबते मनुष्य को बचाने के लिए नदी में कूद पड़े और आप भी डूब जाये तो क्या उसे आत्मघात का पाप लगेगा?

उत्तर– धर्माधर्म मनुष्य की वहिरंग और अन्तरंग सत्ता से होते हैं। इनको कर्म और सुकर्म–कुकर्म भी कहा जाता है। परोपकार के लिए परिश्रम करते यदि बीच ही में प्राणानत हो जाये तो भी वह मनुष्य पुण्य उपार्जन कर लेता है। ऐसे जन को पाप कदापि नहीं लगता।

–आर्यसमाज प्रेमनगर का 3 दिवसीय वार्षिकोत्सव सोल्लास सम्पन्न

'हाथ मुंह धोना कर्म है और सन्ध्या करना धर्म है। कर्म छूट सकता है परन्तु धर्म नहीं : पं० लेखराम'

– मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून

आर्य समाज प्रेमनगर, देहरादून का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव आज २६ मार्च, २०१७ को सोल्लास सम्पन्न हो गया। हमें इस आयोजन के अधकांश कार्यक्रमों में सम्मिलित होने का अवसर मिला। इस आयोजन में भाग लेकर हमें प्रसन्नता है। आज प्रातः समाज में आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री जी के ब्रह्ममत्व में वृहद यज्ञ सम्पन्न हुआ। यज्ञ के पश्चात भजन एवं प्रवचनों सहित विद्वानों के सम्मान हुए एवं कुछ अन्य कार्यक्रम भी हुए। भजन व सत्संग से पूर्व समाज के प्रधान डा० अशोक कुमार बंसल ने समाज के बारे में अनेक सूचनायें दीं। दो लड़कियों के विवाह आर्यसमाज के द्वारा कराये गये जिसमें पर्णव्यय आर्यसमाज की ओर से किया गया। योग शिविर भी समय–समय पर आर्यसमाज में आयोजित किये जाते रहे हैं। लोगों के घरों में जा जा कर वेद प्रचार के अन्तर्गत यज्ञ एवं सत्संग किया जाता है जिसका समस्त व्यय आर्यसमाज करता है। यदि परिवार चाहे तो स्वयं भी कर सकता है। पहले यह कार्यक्रम वार्षिकोत्सव के कुछ समय पूर्व आयोजित किये जाते थे परन्तु अब इसे वर्ष भर चलाने की सहमति बनी है। गुरूकुल व अन्यत्र कुछ बच्चों की शिक्षा का पूर्ण व्यय वहन किया जाता है। इन सब कार्यों व सेवा भाव की मुक्त कण्ठ से सराहना की और कहा कि उनका मुझे सन्तोषजनक सहयोग प्राप्त हो रहा है। उन्होंने कहा कि हमने अनेक कार्य व उनका प्रबन्ध श्री पीयूष जी को सौंपा हुआ है। प्रधान जी ने आचार्य सुनील जी की भी प्रशंसा की और कहा कि वह हमारी आर्यसमाज के अंग हैं।

प्रधान जी के सम्बोधन के बाद एक १० वर्षीया बालिका चार्वी मेन्दीरत्ता ने शाकाहार के समर्थन में एक सारगर्भित व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने व्याख्यान में कहा कि मनुष्य का मूल स्वभाव शाकाहारी है। मनुष्य शरीर की संरचना एवं उसकी मूल प्रकृति उसका शाकाहारी होना दर्शाती है। मांस मनुष्य का मूल स्वभाव शाकाहारी है। मनुष्य शरीर की संरचना एवं उसकी मूल प्रकृति उसका शाकाहारी होना दर्शाती है। मांस मनुष्य का स्वाभाविक भोजन नहीं है। भारत में विश्व के सबसे ज्यादा लोग, जिनकी संख्या करोड़ों में है, शाकाहारी हैं। भारत मे विश्व का एकमात्र देश है जहां सबसे अधिक लोग शाकाहारी हैं। अमेरिका आदि अनेक उन्नत व विकसित देशों में लोग मांसाहार छोड़ रहे हैं। वैज्ञानिक व शरीर विज्ञानियों की दृष्टि में भी मांसाहार अनेक रोगों का कारण है और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। मांसाहार उच्च रक्तचाप व मधुमेह में हानिकारक व अहितकारी होने के साथ हड्डियों व दांतों को कमजोर करता है। मांसाहार तन को ही रोगी नहीं बनाता अपितु मन को भी रोगी बनाता है। मांसाहार मनुष्यों की एक बुरी आदत है जिसे बदला जा सकता है। इसके बाद समाज के वरिष्ठ सदस्य एवं अधिकारी श्री के. एल. आहूजा जी ने एक गीत पंक्तियां गा कर सुनाई। कविता के बोल थे ' जीते भी लकड़ी मरते भी लकड़ी देख तमाश लकड़ी का। क्या जीवन क्या मरना कबीरा खेल रचाया लकड़ी का।' इसके बात समाज के मंत्री जी द्वारा समाज को दान में प्राप्त धनराशि की सूचना दी गई। इसके बाद श्री गिरधारी लाल पाहवा जी ने एक भजन गाया जिसके बोल थे ' ओ३म् है जीवन हमारा ओ३म् प्राणाधार है। ओ३म् है कर्ता विधाता ओ३म पालनहार है।' देहरादून के आर्यसमाज के प्रचारक श्री उम्मेद सिंह विशारद ने भी भजन गाने के साथ अपने विचार प्रस्तुत किये। उन्होंने कहा कि हम सुनते हैं कि सत्य कभी बदलता नहीं है परन्तु हम देखते हैं कि देश, काल व परिस्थिति के अनुसर सत्य बदलता भी है। उदाहरण के रूप में उन्होंने कहा कि अभी ११.०० बजे हैं जबकि एक घंटे बाद हम कहेंगे कि अब १२.०० बजे हैं। उन्होंने कहा कि सभा उसको कहते हैं जहां कम से कम एक व अधिक विद्वान हों।

सभा में उपस्थित मुख्य विद्वान आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने अपने सम्बोधन के आरम्भ में आर्यसमाज के नियम 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये' का उल्लेख किया। उन्होंने प्रश्न किया कि क्या प्रत्येक परिस्थिति में सत्य बोलना आवश्यक है? स्वामी दयानन्द जी का उदाहरण देकर उन्होंने बताया कि वह कहते हैं कि यदि लोग उनकी अंगुलियों को बत्तियां बना कर जला भी दे तब भी वह सत्य बोलेंगे, असत्य नहीं। शास्त्री जी ने कहा कि उपदेश वही कर सकता है जिसे भय न खाता हो। विद्वान वक्ता ने महाभारत से द्रोणाचार्य की वीरता का वर्णन किया और कहा कि वह भारी संख्या में पाण्डव पक्ष के योद्धाओं का संहार कर रहे थे। कृष्ण और अर्जुन ने मंत्रणा की और कहा कि यदि इन्हें रोका नहीं गया तो कुछ ही दिन में हमारे सारे योद्धा वीरगति को प्राप्त हो जायेंगे और कौरव पक्ष विजयी हो जायेगा। विचार में द्रोणाचार्य की प्रतिज्ञा की बात कही गई कि यदि कोई द्रोणाचार्य को यह कहे कि उसका पुत्र अश्वत्थामा मारा गया है तो वह युद्ध नहीं करेगा। अर्जुन ने कहा तो द्रोणाचार्य ने विश्वास नहीं किया। तब युधिष्ठिर जी को मनाया गया। बहुत कठिनाई से वह माने। उनका अधूरा वाक्य ही द्रोणाचार्य ने सुना और हथियार फेक दिये। तत्काल उनका सिंर काट दिया गया। आचार्य जी ने पूरा प्रकरण विस्तार से सुनाया। श्री वीरेन्द्र शास्त्री जी ने कहा कि यदि ऐसा न किया जाता तो धर्म व संस्कृति की रक्षा नहीं हो सकती थी। अतः धर्म की रक्षा के लिए यह आपद् धर्म के रूप में असत्य वचनों का प्रयोग किया जाता है। धर्म व सत्पुरूषों की रक्षा के लिए ही इसका प्रयोग होना चाहिये, किसी निजी कार्यों के लिए नहीं।

श्री वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि ऋषि दयानन्द ने श्रीकृष्ण जी को आप्त पुरूष कहा है। उन्होंने कहा कि आप्त पुरुष वह होता है जिसका प्रत्येक शब्द माननीय व स्वीकार करने योग्य हो। उन्होंने पूछा कि यदि पाण्डव झूठ का सहारा न लेते तो क्या वह बच पाते? झूठ बोलकर वहां धर्म बचाया जा रहा था इसलिए वह झूठ झूठ न होकर धर्म व सत्य था। झूठ तब सत्य हो जाता है जब उसके द्वारा धर्म की रक्षा की जाती है। इसी सन्दर्भ में श्री वीरेन्द्र शास्त्री जी द्वारा आर्यसमाज के नियम 'सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये' का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि यहां यथायोग्य के साथ जैसे को तैसा व्यवहार करने की अनुमति है। इसके द्वारा ही कई बार अधर्म से धर्म की रक्षा होती है। आचार्य जी ने कहा कि वेशर्म व वेईमान लोगों के साथ यथायोग्य व्यवहार करना ही उचित है। उन्होंने कहा कि यदि कृष्ण जी यथायोग्य व्यवहार न करते तो देश, धर्म और संस्कृति खतरे में पड़ जाती। उन्होंने कहा कि धर्म रक्षा के लिए झूठ का व्यवहार भी सत्य होता है। आचार्य जी ने कहा कि अपने स्वार्थ के लिए झूठ बोलना गलत है।

आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि अग्नि के स्वभाव में परिवर्तन कभी नहीं होता। वायु व जल के स्वभाव में परिवर्तन हो जाता है। आपने इसके उदाहरण में कहा कि गर्मी वा अग्नि के सम्पर्क में आने पर जल शीतलता को त्याग कर गर्म हो जाता है। आपने कहा कि अग्नि आगे ले जाती है। इसके स्वभाव में कभी परिवर्तन नहीं होता। आपने यह भी कहा कि मन शरीर के अन्दर ही रहता हुआ गति करता है। मन चित्त के संसकारों में रमण करता वा खेलता है। उन्होंने यह भी कहा कि योगियों का मन बाहर गति करता हैं यज्ञ की चर्चा आरम्भ करते हुए आपने कहा कि कितने आर्यसमाजों के भाव उज्ज्वल हैं? आपने यह बात मनसा परिक्रमा के मन्त्रों व यज्ञ प्रार्थना के सन्दर्भ में श्रोताओं को कही। आर्यसमाज के अधिकारियों के सन्दर्भ में आपने कहा कि सम्मान से अधिकार व पद छोड़ने से सम्मान बरकरार रहता है। उन्होंने कहा कि जो समाज का अधिकारी प्रतिदिन यज्ञ न करे, ऐसे समाज के अधिकारी ढ़ोगीं होते हैं। आपने कहा कि आपको सर्वसम्मति से जिला सहारनपुर आर्यसमाज का अध्यक्ष बनाया गया है। आपने अपने अधीन एक ५ सदस्यीय समिति बनाई है जिसका उद्देश्य सदस्य एवं अधिकारियों के घरों में जाकर उनके परविार से बातें करना है कि वहां सन्ध्या व यज्ञ होता है या नहीं, स्वाध्याय करते हैं या नहीं? सत्संग में जाते हैं या नहीं? मांसाहार, अण्डे व धूम्रपान का कोई सेवन तो नहीं करता? आचार्य जी ने कहा कि कुछ लोगों के बारे में पुष्ट जानकारी मिलने के बाद हमने दो अधिकारियों को उनके पदों से हटा दिया। आचार्य जी ने कहा कि अधिकारी उन लोगों को बनायें जो आर्यसमाज के नियम व सिद्धान्तों का पालन करते हैं। उन्होंने कहा कि जब तक हम सैद्धान्तिक दृष्टि से आर्यसमाजी नहीं बनते, हम ऋषि दयानन्द के अनुयायी नहीं हो सकते।

आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने कहा कि यज्ञमय जीवन वाला वेदानुयायी बन जाता है। घर में जब यज्ञ होगा तभी परिवार आर्यसमाजी बनेगा अन्यथा नहीं। यज्ञ क्यों करें के उत्तर में उन्होंने कहा कि पंचमहायज्ञ करना प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए अनिवार्य है। उनहोंने कहा कि दयानन्द जी और मनुस्मृति के अनुसार भी हमें यथाशक्ति पंचमहायज्ञ करने चाहिए। यदि हम पंचमहायज्ञ नहीं करेंगे तो पाप के भागी होंगे। यदि करेंगे तो पुण्य के भागी नहीं होंगे। परमात्मा का हमें धन्यवाद करना है, हम उसके ऋणी हैं, नहीं करेंगे तो ऋण न चुकाने के कारण हमें पाप लगेगा। बुद्धि की चर्चा पर आचार्य जी ने कहा कि यह हमें ईश्वर की देन है। इसके लिए यदि ईश्वर का धन्यवाद करें तो पाप नहीं लगेगा परन्तु पुण्य नहीं मिलेगा और यदि ईश्वर का धन्यवाद नहीं करते तो ईश्वर का कर्ज व ऋण दूर न होने से पाप लगेगा। उन्होंने कहा कि मनुष्य का शरीर सब प्राणियों से श्रेष्ठ है। परमात्मा ने पशु व पक्षी आदि प्राणियों को बुद्धि नहीं लगता। हम प्रभु के ऋण से उऋण होने के लिए उसका धन्यवाद करते हैं। आचार्य जी ने कहा कि कोई किसी से कर्ज ले और न लौटाये तो उसे पाप लगेगा। लोग उसे बेईमान कहेंगे। उन्होंने पूछा कि यदि मैं किसी का कर्ज लेकर लौटाता हूँ तो क्या कोई माला लेकर आता है? उन्होंने कहा कि इसी प्रकार से पंचमहायज्ञ करने से कर्ज लौटाया जाता है, पुण्य नहीं होता। आचार्य जी ने कहा कि वह प्रवचन कर ऋषि ऋण से उऋण होने का प्रयास करते हैं। यदि कोई मेरा प्रवचन सुनकर सुधार करता है तो मुझे पुण्य मिलेगा नहीं तो उन्होंने कहा कि यज्ञ कि १६ आहुतियां शुद्धि के लिए होती हैं जितना प्रदुषण हमारे निमित्त से होता है। अन्तःकरण की पवित्रता का महत्व भी उन्होंने बताया। ईश्वर का वाक्य उन्होंने ओ३म बताया। उन्होंने कहा कि जब हम ओ३म का उच्चारण करें तो हमारे भीतर ईश्वर के सर्वरक्षक होने का भाव आना चाहिये। परमात्मा के पास बैठकर यदि हम सन्ध्योपासन करेंगे तो हमारे गुणों में

शेष पृष्ठ ८ पर

विश्व की सर्वप्रथम समाज मुम्बई का 143वां स्थापना समारोह सम्पन्न

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा १४३ वर्ष पूर्व स्थापित विश्व की प्रथम आर्य समाज, काकड़वाणी गली, वी.पी.रोड मुम्बई का स्थापना दिवस दिनांक २८ मार्च २०१७ को बड़ी धूम धाम से उत्साह पूर्वक मनाया गया।

उत्सव में डा० वागीश शर्मा एटा, श्री प्रभाकर गुप्त मुम्बई, श्रीमती अनीता शास्त्री मुम्बई आदि विद्वानों ने पधार कर शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री मिठाई सिंह जी तथा मुख्य अतिथि श्री अरूण अब्रोला जी थे। कार्यक्रम में आर्य श्रेष्ठी सम्मान श्री वेद प्रकाश गर्ग मुम्बई, तथा आर्य वैदिक विद्वत् सम्मान डा० वागीश आचार्य एटा, एवं विशेष सम्मान श्रीमती शिवराजवती आर्या मुम्बई को दिया गया। कार्यक्रम के संयोजक पं० देवदत्त शर्मा एवं पं० श्रवण कुमार शर्मा थे।

शोक संवेदना

1. आर्य समाज ततारपुर के सदस्य मुनेश कुमार आर्य (मुन्ना) की माता जी का २४ फरवरी को स्वर्गवास हो गया वे लगभग ८५ वर्ष की थीं। नरेन्द्र शास्त्री उनके सुपुत्र सत्यपाल शास्त्री हरियाणा ने शान्ति यज्ञ वैदिक रीति से किया। सभा मन्त्री धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने परिवार में जाकर शोक संवेदना व्यक्त की।

2. आर्य समाज हाजीपुर स्याना बुलन्दशहर के पूर्व मन्त्री शिवलाल शास्त्री जी का स्वर्गवास १० मार्च को हो गया वे लगभग ७५ वर्ष के थे पूठ में अन्तिम संस्कार गुरूकुलपूठ के ब्र० ने किया प्रमोद आचार्य जी पसवाड़ा ने किया सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ने परिवार में जाकर सभा की ओर से शोक संवेदना व्यक्त कर धैर्य प्रदान किया।

3. आर्य समाज किला परीक्षितगढ़ मेरठ के सदस्य सत्यवीर सिंह जी खैय्या के परिवार में मृत्यु होने से दुःखद वातावरण बन गया स्वामी अखिलानन्द जी गुरूकुल पूठ ने जाकर शान्ति यज्ञ सम्पन्न किया सभा मन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने भी परिवार को धैर्य प्रदान किया।

4. आर्य समाज शास्त्री नगर मेरठ में आर्य भजनोपदेशक श्री सत्यदेव स्नातक की शोक श्रद्धांजली सभा का आयोजन किया गया-मेरठ नगर की सभी आर्य समाजों ने सामूहिक रूप से वही समाज में शान्ति यज्ञ कर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। श्री हरवीर सुमन ने संयोजन किया सभी समाजों के मुख्य अधिकारियों ने उनके संस्मरण सुनाये। उनके पुत्र प्रकाशवीर आर्य, वीरेन्द्र आर्य को सभी ने मिल कर शीभाशीर्वाद दिया।

–अखिलानन्द सरस्वती
वेद प्रचार अधिष्ठाता –गुरूकुल पूठ

गुरूकुल पूठ-गढ़मुक्तेश्वर-हापुड़ (उ०प्र०)में
शोक श्रद्धांजली

आर्य वैदिक विद्वान् सत्येन्द्रसिंह आर्य मेरठ का २६ मार्च २०१७ को चैत्र सुदी प्रतिपदा नव वर्ष पर जब लोग आर्य समाज का स्थापना दिवस मना रहे थे एक आर्य विद्वान चिर निद्रा में विलीन हो गए। उनका अभाव लम्बे समय तक याद आयेगा। वे गुरूकुलपूठ के व्यवस्थापक एवं अधिष्ठाता तथा "दिव्यप्रेरणा" मासिक पत्रिका के सम्पादक के रूप में वर्षों तक सेवा करते रहे। आप स्वाध्याय शील–परिश्रमी–कुशल लेखक एवं वक्ता थे आप इतिहास के मर्मज्ञ विद्वान थे। आप उदारवादी मिलन सार एवं महर्षिदयानन्द सरस्वती के सच्चे अनुयायी सच्चे सिद्धान्तवादी–परोपकारी प्रिय एवं धुन के धनी धुरन्धर थे मुम्बई स्टेट बैंक में आप जब कार्यरत थे तभी से मेरा परिचय हुआ फिर मेरठ तथा अजमेर परोपकारिणी सभा में वर्तमान में रह रहे थे। डा० धर्मवीर जी के अन्तिम संस्कार के अवसर पर उनके दर्शन करने आया था, अब बेटे के पास बंगलौर मिलने गए थे कि अचानक ऐसी सूचना प्राप्त हुई जिससे आर्य जगत् हतप्रभ रह गया। मेरठ क्षेत्र की वे विशेष पहिचान थे आर्य जन श्रद्धा से उन्हें सुनकर लाभान्वित होते थे। गुरूकुलपूठ परिवार उनके प्रयाण से शोकमग्न है कुलपरिवार के परिषेक्ता के प्रति सभी कुलवासी अपनी श्रद्धाञ्जली अर्पित करते हुए आत्मीय परिवार के प्रति धैर्य की प्रार्थना करते हैं। प्रभो इन्हें आत्मशक्ति प्रदान करो। शोकाकुल परिवार में आपका अपना ही–

धर्मेश्वारानन्द सरस्वती
मन्त्री – आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ
संचालक– गुरूकुलपूठ–गढ़– हापुड़
मो० : ६८३७४०२१६२

यजुर्वेद पारायण यज्ञ

1. गजरौला जि० अमरोहा में भीष्म देव आर्य ने अपने परिवार में यजुर्वेद पारायण यज्ञ किया वेदपाठी गुरूकुलपूठ के ब्र० थे ब्रह्मा स्वामी श्री तेजानन्द सरस्वती रहे। सभामन्त्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने यज्ञ प्रारम्भ किया। ७ मार्च को पुनः २० मार्च को पूर्णाहुति पर आकर आशीर्वाद प्रदान किया आर्य समाज गजरौला के अतिरिक्त मण्डी धनौरा एवं जिला सभा अमरोहा के प्रधान ओमपाल आर्य भी उपस्थित रहे।

2. आर्य समाज हस्तिनापुर मेरठ में टीला पर १० मार्च से १३ मार्च तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती ब्रह्मा रहे। भजनोपदेशक नरेश निर्मल, कुलदीप जी विद्यार्थी एवं गजराज प्रेमी रहे वेद प्रकाश शास्त्री संयोजक एवं महन्त रमन स्वामी ने सभी का अतिथ्य किया कार्यक्रम प्रभावशाली रहा।

3. आर्य समाज टिटोड़ा मुजफ्फर नगर में स्वामी कर्मवीर जी के आशीर्वाद से मांगेराम आर्य तथा चन्द्रदेव जी शास्त्री के संयोजन में यजुर्वेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी अखिलानन्द सरस्वती रहे कार्यक्रम में सन्यासी विद्वान भजनोपदेशक भारी संख्या में रहे स्वामी प्रणवानन्द जी स्वामी, धर्मेश्वनानन्द जी सभा मन्त्री, कुलदीप आर्य आचार्य, अनंजय आचार्य, चन्द्रभूषण जी आदि प्रमुख रूप से रहे पूरे क्षेत्र की जनता ने लाभ उठाया। यह यज्ञ प्रतिवर्ष होली के पावन पर्व पर ही होता है।

गुरूकुल महाविद्यालय ततारपुर- हापुड़

प्रवेश प्रारम्भ

हापुड़ नगर से गढ़रोड पर ५ कि०मी० दूर ततार पुर ग्राम में स्व० मुनीश्वरानन्द सरस्वती निवेदतीर्थ द्वारा स्वापित आचार्य कक्षा पर्यन्त मान्यता प्राप्त गुरूकुल में प्रवेश प्रारम्भ हो गए हैं स्थान सीमित है शीघ्रता करें नियमावली मंगाये। गुरूकुल में छात्रावास एवं योग्य विद्वानों द्वारा कड़ा अनुशासन पढ़ाई की सुन्दर व्यवस्था है।

शीश पाल सिंह अध्यक्ष
ओम दत्त आर्य प्रबन्धक
प्रेम पाल शास्त्री प्रचार्य
मो० : ६४१०४७५५८०

गुरूकुल महाविद्यालय पूठ-गढ़मुक्तेश्वर हापुड़ (उ०प्र०) में प्रवेश प्रारम्भ

गंगा किनारे गढ़मुक्तेश्वर के निकट गुरूकुल म०वि० पूठ में प्रवेश प्रारम्भ हैं। यहाँ शान्त वातावरण है। उ०प्र० मा०सं० शि० परिषद् लखनऊ द्वारा माध्यमिक एवं सं० सं० वि० वि० वाराणसी से आचार्य तक मान्यता प्राप्त है आदर्श गौशाला का शुद्ध दूध एवं योग्य शिक्षकों द्वारा कड़ा अनुशासन पढ़ाई की सुन्दर व्यवस्था है।

धनुर्विद्या सिखाने की व्यवस्था है आर्य वीर दल की शाखा द्वारा व्यायाम प्रशिक्षण केन्द्र के साथ–साथ संस्कार प्रशिक्षण की भी सुन्दर व्यवस्था है। प्रवेश परीक्षण के बाद ही प्रवेश होगा नियमावली मंगाकर शीघ्रता करें।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती	**आचार्य राजीव**	**आचार्य दिनेश**	**अखिलानन्द**
संचालक	प्राचार्य	व्यवस्थापक	अधिष्ठाता
६८३७४०२१६२	६४१०६३८४४४	६४११०२६७७५	

घोषण – पत्र

उत्तर प्रदेश UTTAR PRADESH

घोषणा–पत्र

(फार्म–1) (सेक्शन रूल–3) 23AD 148525

मैं स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती आत्मज श्री धनत्तर सिंह, निवासी–गुरुकुल महाविद्यालय पूठ, पो0–बहादुरगढ़, जिला–हापुड़ एवं मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ घोषणा करता हूँ कि मैं "आर्य मित्र" नामक साप्ताहिक समाचार पत्र का प्रकाशक एवं मुद्रक हूँ जो लखनऊ से प्रकाशित एवं मुद्रित किया जा रहा है। उक्त पत्र के सम्बन्ध में जो विवरण नीचे दिये हैं ये मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य हैः–

1–	पत्र का नाम	–	आर्य मित्र
2–	पत्र की भाषा	–	हिन्दी
3–	प्रकाशन की अवधिकता		
	(क) दैनिक, साप्ताहिक/पाक्षिक या अन्य कोई।	–	साप्ताहिक
	(ख) दैनिक के अतिरिक्त अन्य समाचार के मामले में कृपया दिन/दिनों/तिथियों का उल्लेख करें, जिसमें वह प्रकाशित होगा।	–	मंगलवार/बुधवार
4–	समाचार पत्र का बिकी खुदरा मूल्य	–	रू0 2 मात्र
	(क) यदि समाचार पत्र निःशुल्क वितरण के लिए हो तो उल्लेख करें, कि यह निःशुल्क वितरण के लिए हैं।		
	(ख) यदि इसके लिए कोई वार्षिक चन्दा लिया जाता हो तो कृपया वार्षिक चन्दे का उल्लेख करें।	–	रू0 100/– प्रति वर्ष
5–	प्रकाशक का नाम	–	मन्त्री(पदेन)स्वामीधर्मेश्वरानन्द सरस्वती, आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
6–	राष्ट्रीयता	–	भारतीय

शेष पेज 2 पर

(2)

7–	पता	–	आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
8–	उन मुद्रक प्रेसों के नाम जहाँ मुद्रण कार्य किया जाता हो, तथा उस पर परिसर (उन परिसरों का सही व विस्तृत विवरण जिसमें प्रेस लगी हो)	–	भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थाई शारदा प्रिंटिंग प्रेस, 109/39, मॉडल हाऊस लखनऊ एवं 108/195, न्यू मॉडल हाऊस, लखनऊ–226018
9–	सम्पादक का नाम	–	मन्त्री(पदेन)स्वामीधर्मेश्वरानन्द सरस्वती पुत्र स्व0 धनत्तर सिंह
	राष्ट्रीयता	–	भारतीय
	पता	–	गुरुकुल महाविद्यालय पूठ, पो0–बहादुरगढ़, जिला–हापुड़।
10–	स्वामी का नाम व पता		
	(क) कृपया फर्म विस्तृत पूँजी कम्पनी न्यास, व्यक्तियों के नाम जो समाचार के स्वामी हों	–	आर्य प्रतिनिधि सभा उ0प्र0 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
	(ख) कृपया उल्लेख करें कि क्या स्वामी स्वामित्व में अन्य कोई समाचार पत्र भी हैं, और यदि है तो उसका नाम	–	नहीं
11–	कृपया उल्लेख करें कि घोषण–पत्र निम्नलिखित के सम्बन्ध में–		
	(क) एक नये समाचार पत्र के बारे में	–	नहीं
	(ख) एक चालू समाचार पत्र के बारे में	–	हॉं "आर्य मित्र"(साप्ताहिक)
	(ग) यदि घोषणा मद (ख) के अन्तर्गत आती हैं तो घोषणा पत्र प्रस्तुत करने का कारण	–	प्रकाशक/मुद्रक, सम्पादक एवं पूर्व अधिकृत प्रेस बदलने के कारण।

दिनांक–

घोषणा–पत्र
प्रकाशक/मुद्रक

मेरे सम्मुख आज दिनांक 06.5.2017 को घोषणा की गई।

कार्यालय जिलाधिकारी

आवश्यक सूचना

सेवा में,

माननीय जिलाधिकारी महोदय,

नैनीताल (उत्तराखण्ड)।

विषय : आर्य समाज भवाली–नैनीताल (उ०ख०) की रक्षार्थ निवेदन पत्र।

महोदय,

निवेदन है कि आर्य समाज भवाली–नैनीताल (उ०ख०) आर्यप्रतिनिधि सभा उ०प्र० ५ मीराबाई लखनऊ उ०प्र० की सम्पत्ति है। आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत पिछले लम्बे समय से भवाली में पुस्तकालय का संचालन, समाजसेवा, दलितोद्धार, नारी शिक्षा, युवा चरित्रनिर्माण, भारतीय संस्कृति की रक्षा हेतु प्रयास करता रहा है।

श्री महेश चन्द्र अग्रवाल बनाम सरकार उ०ख० उच्च न्यायालय में संस्था को हानि पहुंचाने अथवा हड़पने के लिए प्रयास किया जा रहा है जो अत्यन्त गम्भीर एवं चिन्ताजनक है। लीज की भूमि को फ्री होल्ड आर्य समाज भवाली के पक्ष में करने का कष्ट करें। ताकि भविष्य में धर्मार्थ चिकित्सालय, पुस्तकालय, यज्ञ द्वारा पर्यावरण शुद्धि कार्य विधिवत् चलता रहे। आशा है निवेदन स्वीकार कर अनुग्रहीत करेंगें।

आपका भवदीय

ह० .... ह०........................

प्रधान मन्त्री

आर्य समाज .... (मोहर लगाये)

नोट : प्रदेश की सभी आर्य समाजें अपने लेटर पैड़ पर उक्त पत्र लिखकर रजिस्ट्री जिलाधिकारी नैनीताल उ०ख० को करें उसकी प्रतिलिपि सभा कार्यालय 5 मीराबाई मार्ग लखनऊ भी भेजें।

धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

मन्त्री– आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र०

मो० : ६८३७४०२१६२

म० नारायण स्वामी आश्रम

रामगढ़ तल्ला – नैनीताल (उ०ख०)

योग–ध्यान साधना शिविर

६, १०, ११, १२ जून २०१७ शुक्रवार से सोमवार तक साधक महानुभाव। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी उक्त तिथियों में योग शिविर का आयोजन रामगढ़ तल्ला आश्रम में हो रहा है आप से निवेदन है कि आप अपने पधारने की पूर्व सूचना एवं पंजीकरण के पश्चात् ही आप शिविर में भाग ले सकेगें। स्थान सीमित है अतः शीघ्रता अपेक्षित है। पंजीकरण शुल्क ५००/– रूपये रहेगा। आश्रम के अतिरिक्त आवास की सुविधा आपको स्वयं वहन करनी होगी। शिविर के नियमों का पालन करना अनिवार्य होगा। आप पंजीकरण के लिए निम्न स्थानों पर सम्पर्क कर सकते हैं–

१. अशोक कुमार आर्य – मो० ६८३७०६६५४४

२. प्रभात कुमार शास्त्री – मो० ६६६०१३५५६०

३. भुवन चन्द्र पाठक – मो० ६४५०३६०५०६

४. आर्यप्रतिनिधि सभा – मो० ०५२२–८२८६३२८
उ०प्र० कार्यालय ५ मीरा बाई मार्ग, लखनऊ

५. हरीश शास्त्री – ६३२०६२२२०५

६. संदीप मुनी (संयोजक) – ६०१२१३०३२२

आर्य मित्र
नारायण स्वामी भवन, ५-मीराबाई मार्ग, लखनऊ दूर/फैक्सः ०५२२-२२८६३२८
का० प्रधान- ०६४१२७४४३४१, मंत्री- ०६८३७४०२१६२, व्यवस्थापक- ६३२०६२२२०५
ई-मेल : apsabhaup86@gmail.com

सेवा में,
.....
.....
.....

गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार का वार्षिक सम्मेलन सम्पन्न

भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता के संवाहक हैं गुरूकुल

- धर्मेश्वरानन्द सरस्वती
सभा मंत्री

सभा मन्त्री को सम्मानित करते हुए कुलपति जी

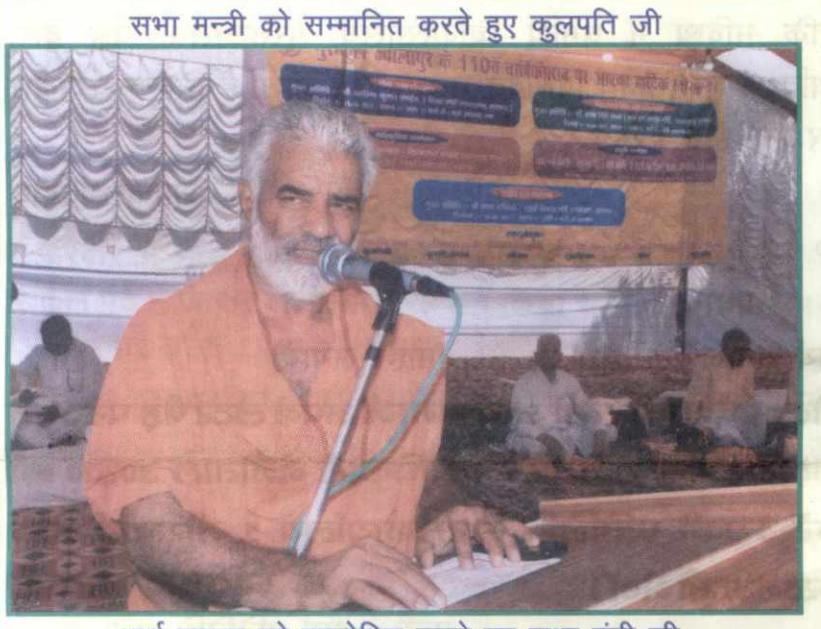

आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए सभा मंत्री जी

मंच के दृश्य अध्यक्षता के रूप में उपस्थित – सभा मंत्री

१५, १६ अप्रैल २०१७ को गुरूकुल महाविद्यालय ज्वालापुर हरिद्वार के १२० वें वार्षिक महासम्मेलन का शुभारम्भ प्रातः यज्ञ से किया गया यज्ञ ब्रह्मा आ० छविकृष्ण जी शास्त्री दिल्ली रहे। तत्पश्चात् वेद सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० के महामंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। इस सम्मेलन में गुरूकुल वि.वि. कांगड़ी के कुलपति डा० सुरेद्र कुमार वेदविभाग से डा० दिनेश चन्द्र शास्त्री, डा० भरत भूषण वेदालंकार डा० मनुदेव बन्धु, दिल्ली से डा० शिवकुमार शास्त्री, सत्यदेव गुप्ता आगरा, डा० सुरेन्द्र कुमार जी रोहतक, अम्बरीश जी पूर्वविधायक, डा० छवि कृष्ण जी दिल्ली, श्री रासा सिंह रावत पूर्व सांसद अजमेर आदि वक्ताओं ने वेद विषय पर विचार से अपने भाव व्यक्त किये अन्त में स्वामी जी ने गुरूकुलीय संस्मरण सुनाकर वेदमय जीवन जीने के लिए प्रेरणा प्रदान की गुरूकुल परम्परा ही वेद संस्कृति, संस्कार, संस्कृति एवं भारतीय सभ्यता की रक्षा करते हुए बढ़ा सकते हैं संयोजन महाविद्यालय के प्राचार्य श्री केशव प्रसाद जी उपाध्याय ने किया। सभी विद्वज्जनों को शाल. स्मृतिचिन्ह माला तथा गिफ्ट देकर म०वि० के कुलपति डा० हरि गोपाल जी आचार्य ने सम्मानित किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी बड़ा प्रभावशाली रहा रात्रि में भजनोपदेशक हुए जिसमें योगेन्द्र शास्त्री, अशोक आर्य, श्यामवीर, राघव दिल्ली रहे रविवार को समापन सत्र में दिल्ली से पधारे योगेश आत्रेय, टी०आर० मित्तल, प्रवीण गर्ग, संजीव गोयल, अनिल गोयल, डा० अतुल मगन आयुर्वेद फार्मेसी यजमान पद पर प्रतिष्ठित हुए और यज्ञ की पूर्णाहुति की। तत्पश्चात योग आयुर्वेद सम्मेलन एवं सम्मान समारोह कार्यक्रम का आयोजन आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ के सभा मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ सम्मेलन में मुख्य अतिथि के रूप में उ०खण्ड सरकार के आयुष एवं वन मंत्री हरक सिंह रावत मुख्य अतिथि के रूप में पधारे और विद्वानों का सम्मान किया स्वामी यतीश्वरानन्द सरस्वती जी विधायक तथा योगेश आत्रेय तथा श्री टी०आर० मित्तल जी को विशेष सम्मान एवं मानद उपाधि से अलंकृत किया गया।

वक्ताओं में डा० विश्वपालजयन्त आधुनिक भीम, डा० रूपकिशोर जी तथा हरक सिंह जी रावत ने अपने विचारों से आर्य जनता को लाभान्वित किया। संयोजन डा० सुरेन्द्र कुमार जी शर्मा ने किया अध्यक्ष पद से स्वामी जी ने योग एवं प्रणायाम की विशेषताओं से आर्य जनता को अवगत कराया। गुरूकुल कोषाध्यक्ष आचार्य रमेश चन्द्र शास्त्री दिल्ली, कुलपति श्री डा० हरिगोपाल जी शास्त्री, अजय कौशिक एवं प्रधान श्री चौहान जी ने सभी अतिथियों को शाल, माला स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया, रात्रि में कवि सम्मेलन, राष्ट्रीय कवि सम्मेलन के रूप में श्री आचार्य डा० विष्णु दत्त राकेश साहित्यक अध्यक्षता में हुआ संयोजन डा० सुशील कुमार अमित त्यागी ने किया। इसमें संगीतकार रमेश शरण, अफजल मंगलौरी, श्रीमती अनीता आनन्द, हुक्का विजनौरी, युवा कवि किसलय, युवा कवि अरूण किशोर आनन्द, रियाज अहमद, डा० वागीश पालीवाल, हेमन्त तिवारी, योगेन्द्र सिंह एडवोकेट, स्वामी यतीश्वरानन्द सरस्वती, तथा कुलपति डा० हरिगोपाल शास्त्री ने भी, कवियों को सम्मानित कर, आभार व्यक्त किया, डा० सुशील कुमार अमित का संयोजन प्रशंसनीय रहा। उ०ख० सरकार के शिक्षा मंत्री श्री अरविन्द जी पाण्डेय, विधान सभा अध्यक्ष के अतिरिक्त क्षेत्रीय विधायक अमरीश कुमार जी सहित क्षेत्रीय राजनैतिक, सामाजिक, एवं अध्यात्मिक, साहित्यिक, विद्वानों ने कुल भूमि में पधार कर सम्मेलन की शोभा बढ़ाई तथा संस्था के प्रति आत्मीय भाव स्थापित किया स्वामी यतीश्वरा नन्द जी मंत्री तथा कुलपति महोदय का विशेष पुरूषार्थ स्पष्ट दिखाई दे रहा था। पूज्य स्वामी दर्शनानन्द के सपनों को सकार करने में जो अधिकारी आचार्य, कार्यकर्ता अहर्निष, पुरूषार्थ कर रहे हैं वे नमन के योग्य हैं, मैं गुरू परम्परा एवं गुरूकुल परम्परा के प्रति अपना श्रद्धाभाव अभिव्यक्त करता हुआ आर्य जनता से निवेदन करूगा कि तन मन धन से इन संस्थाओं का पोषण करते रहे।

पृष्ठ ३ का शेष

'हाथ मुंह धोना कर्म है और सन्ध्या करना धर्म है....

सुधार होगा। आचार्य पतंजलि के पुत्र सौभरी मुनि का उदाहरण देकर बताया कि जल में मछलियों को देखकर उनके संस्कार बदल गये और उन्होंने विवाह कर लिया था। बाद में सौभरी मुनि ने कहा कि आनन्द तो ईश्वर के सान्निध्य में ही है, विवाह व बच्चों में नहीं। संस्कार बदलने से उन्होंने विवाह किया था।

आचार्य जी ने कहा कि यज्ञ पवित्र एवं उत्तम कार्य हैं। इसके करने से मनुष्य भी पवित्र व उत्तम बन जाता है। यज्ञ को छोड़ने से हम संगतिकरण से वंचित हो गये हैं। इसी कारण परिवार में सभी सदस्यों के एक समान संस्कार नहीं हैं। आचार्य जी ने यज्ञ से जुड़ने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि नित्य प्रति सन्ध्या अवश्य करो। हृदय में ईश्वर को जानकर प्रार्थना ही सन्ध्या है। आपने धर्म–कर्म की चर्चा की और कहा कर्म छूट जाये परन्तु धर्म नहीं छूटना चाहिये। इसके लिए उन्होंने स्वामी श्रद्धानन्द जी और पं. लेखराम जी का उदाहरण दिया। उन्होंने बताया कि रेलयात्रा करते हुए सन्ध्या समय होने पर लेखराम जी ने बिना हाथ मुंह धोये सन्ध्या की। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने उन्हें उलाहरना देते हुए कहा कि कर ली आपने पेशावरी सन्ध्या? पं० लेखकराम जी उनका आशय समझ गये और बोले, महात्मा जी! हाथ मुंह धोना कर्म और सन्ध्या करना धर्म है। कर्म छूट सकता है परन्तु धर्म नहीं। इसी के साथ आचार्य जी ने अपने वक्तव्य को विराम दिया।

आचार्य जी के बाद गुरूकुल पौंधा देहरादून के आचार्य डा० धनंजय जी और दयानन्द आर्य वैदिक स्नातकोत्तर महाविद्यालय की संस्कृत विभाग कि प्रचार्या सुखदा सोलंकी जी का प्रवचन होना था। हम आर्यसमाज सुभाषनगर, देहरादून के वार्षिकोत्व के लिए चले गये अतः दो महत्वपूर्ण व्याख्यान हम नहीं सुन सके। इसका हमें दुःख है। सत्र की समाप्ति के बाद सामूहिक ऋषि लंगर हुआ है। वार्षिकोत्सव का आयोजन सोल्लास सम्पन्न हुआ।

स्वामी–आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश सम्पादक–आचार्य वेदव्रत अवस्थी, मुद्रक प्रकाशक–श्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, भगवानदीन आर्य भाष्कर प्रेस, 5–मीराबाई मार्ग, लखनऊ के लिए अस्थायी रूप में शारदा प्रिंटिंग प्रेस, माडल हाउस, लखनऊ से मुद्रित एवं प्रकाशित लेखों में वर्णित भाषा या भाव से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है– सम्पूर्ण विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ न्यायालय होगा।